माध्यमिक स्तर पर द्विभाषी शिक्षण का विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, शैक्षिक समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

फाउंडेशन ऑफ़ एजुकेशन विषय से पी-एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबंध की प्रस्तावित रुपरेखा

शोधार्थिनी
सोनिया सागर

शोध निर्देशिका
डॉ.कल्पना गुप्ता

फाउंडेशन ऑफ़ एजुकेशन विभाग, शिक्षा संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीटयूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग,आगरा – 282005

2022

1.1.0 प्रस्तावना

भारत एक बहुसांस्कृतिक विशाल देश है जहां हमें विविधता धर्म, जाति एवं भाषाओं के रूप में दृष्टिगोचर होती है। यह विविधता हमें सांस्कृतिक, व्यापारिक एवं सामाजिक कारणों के फलस्वरूप अस्तित्व में दिखाई पड़ती है। भारत की संस्कृति इतनी समृद्ध है कि भाषा के संबन्ध में यह कहावत है कि ''कोस कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बदले बानी।'' इसी तथ्य को आधार बनाते हुए शैक्षिक प्रारूप वर्तमान परिस्थिति में बहुभाषिकता की स्तिथि पर आधारित होती हुई दिखाई देती है वहीँ शिक्षकों या विद्यार्थियों के लिए बहुभाषी परिस्थिति शैक्षिक स्तर पर संभव हो पाना बाधा जनक लगता है, जबकि इसके विपरीत व्यक्ति जब एक ही भाषा को आधार बनाते है, तो वह किसी न किसी क्षेत्र में अपने आप को दूसरो के समक्ष अपने आप को पिछड़ा हुआ समझते है ये हम निम्नलिखत अध्ययन के आधार पर देख सकते हैं|, **" तेलंगना कैबिनेट सब कमिटी, हैदराबाद (मार्च 3, 2022),** के द्वारा बताया गया कि सरकारी विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होना चाहिए और टैक्स्ट बुक दो भाषाओं में दी जानी चाहिए। इस कमिटी में **डॉ. मारी चन्ना रेड्डी** द्वारा बताया गया कि कक्षा 1 से 8 तक सभी सरकारी विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी हो और विद्यार्थी को सारी शैक्षिक सुविधाएं प्रदान की जाए उन्होंने कहा के यह विद्यार्थी को अंग्रेजी माध्यम से जोड़ने में सहायता करेंगी, और शिक्षकों के लिए विशिष्ट अंग्रेजी प्रशिक्षण भी प्रदान किए जायेंगे, ताकि उनको अंग्रेजी पढ़ाने में सहायता मिलेगी और उनकी अंग्रेजी और अधिक गतिशील बनेगी। इसलिए वह द्विभाषी शिक्षण को अपनी शिक्षा के आधार के रूप में निश्चित कर सकते है, ताकि वह शैक्षिक, व्यापारिक, सामाजिक परिस्थितियों में हर स्तिथि से अपने आप को एक भागीदार के रूप में तैयार कर सके। परन्तु जहां हम **द्विभाषी शिक्षण** की बात करते है तो वो भारतीयों के लिए कितनी सहायक है या बाधा है यह अभी निश्चित कर पाना कठिन है, क्योंकि भारत की संस्कृति अत्यधिक प्राचीनतम है और कई वर्षो तक भारत अलग-अलग अपने अस्तित्व की खोज में कई शासनों के अंतर्गत भटकता रहा| जिसमें से एक ब्रिटिश साम्राज्य भी रहा है, ब्रिटिशों के साम्राज्य में भारत में अनेक परिवर्तन आए जिसमें से एक शैक्षिक परिवर्तन भी थे, **लॉर्ड मैकाले** द्वारा स्थापित अंग्रेज़ी विषय पद्धति ने कई वर्षों तक भारतीय शिक्षा में अपना अस्तित्व बनाए रखा| परंतु इन सब के बीच भारत की संस्कृति से जुड़ी भाषाएं अपना अस्तित्व खोती चली गई क्योंकि

अंग्रेजों की तरह भारतीय भी यही मानने लगे की विद्यार्थी को अंग्रेजी भाषा का आना अत्यधिक आवश्यक है अगर वह अंग्रेजी भाषा में अपना वर्चस्व नहीं दिखा पाया तो वह पिछड़ जाएगा और वास्तव में वर्तमान भारत की परिस्थिति को देखा जाए तो अंग्रेज़ी को प्रमुखता देते हुए अपने शिक्षा का आधार, पाठ्यक्रम, शैक्षिक लक्ष्य सब अंग्रेजी भाषा पर आधारित विकसित कर रहे है जिस वजह से वे उन विद्यार्थियों को अनदेखा व अपूर्ण छोड़ देते है जो अंग्रेजी भाषा को नही समझ पाते या बोल पाते है। और अंग्रेजी बोलने वाले विद्यार्थियों को अधिक क्षमता वाले व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करते है और जो अंग्रेजी बोल पाने एवम् लिख पाने में सक्षम नहीं है उनको पिछड़ा हुआ पहचान करके नकारते है। जिस वजह से कई बार अधिक क्षमता वाले विद्यार्थी जो केवल अंग्रेजी बोल पाने में सक्षम नहीं होते है वह अपने आप को अधिक असहज, असमायोजित समझने की वजह से पीछे रह जाते है और आगे नहीं बड़ पाते है। अंग्रेजी भाषा विश्व स्तरीय भाषा है जो कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बोली जाने वाली भाषा है जिस वजह से भारत की शिक्षा पद्धति अधिकतर अंग्रेजी माध्यम से चलाई जाती है और आश्चर्य की बात यह है कि अंग्रेजी शासन समाप्त हो जाने के बाद भी भारतीय शिक्षा मुख्य रूप से अंग्रेजी भाषा आधारित हो गयी है| जैसे वर्त्तमान समय में अधिकांश विद्यार्थियों की संख्या UP Board माध्यम से शिक्षा न लेकर के CBSE अथवा ICSE Board माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे है। परंतु भारत की अधिकांश जनसंख्या गांव में निवास करती है और मुख्य रूप से उत्तरप्रदेश में हिंदी मातृभाषा होने की वजह से विद्यार्थी हिंदी भाषा के साथ अधिक सहज हो पाते हैं| परंतु जब वर्तमान स्थिति की बात होती है जहां पर अधिकांश जनसंख्या प्रतिस्पर्धा की भावना से ग्रसित होकर अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम की विद्यालयों में प्रवेश करा देती है, परंतु विद्यार्थी की साधारण रूप से बोलचाल की भाषा हिंदी होने की वजह से विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा पर अपनी पकड़ नहीं रख पाते हैं और उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है कई बार विद्यार्थी असहज महसूस करने की वजह से अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर पाते हैं और वे कक्षा में अन्य विद्यार्थियों के साथ समायोजित नहीं हो पाते हैं जिस वजह से कहीं ना कहीं उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है| प्रस्तुत शोध का उद्देश्य धीरे-धीरे विद्यार्थी को हिंदी भाषा के द्वारा शिक्षण प्रदान करते हुए अंग्रेजी भाषा की ओर उन्मुख करना है ताकि वह कक्षा में समायोजित हो सके। यह द्विभाषी शिक्षण पद्धति को अनिवार्य रूप में प्रदान नहीं करता है, बल्कि विद्यार्थी की समस्या के लिए उपयोग की जाने वाली पद्धति के रूप में द्विभाषी शिक्षण पद्धति का उपयोग करता है ताकि विद्यार्थी की भाषा

सबंधी समस्याओं का समाधान किया जा सके। इन्ही प्रमुख कारणों की वजह से विद्यार्थी कक्षा में आने से, शिक्षकों से बात करने से, एवम् अन्य पाठ्य सहगामी प्रक्रियाओं में भाग लेने से वंचित रह जाता है क्योंकि वह अपना आत्मविश्वास भाषा के आधार पर कक्षा में ही दबा चुका होता है साथ ही उसे अवसर प्रदान करने से भी वांछित रखा जाता है। **पंकज सिंह (2005), के द्वारा "उच्च शिक्षा में मुख्य समस्याएं एवम् समाधान"** बताया गया है कि भारत में शिक्षा की मुख्य समस्याओं में से एक समस्या शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा में होने की मुख्य समस्या है जिसमे बताया गया है कि अंग्रेजो को भारत छोड़े 57 वर्ष हो गए परंतु अंग्रेजी भाषा का आधार अभी भी भारत में चलता ही जा रहा है, जिसमे युवाओं का अधिक अहित होता है क्योंकि कक्षा में जब वह शिक्षा प्राप्त करते है तो वहां केवल अंग्रेजी भाषा में शिक्षण होने की वजह से विद्यार्थी शिक्षा के ज्ञान को ग्रहण करने के बजाए अंग्रेजी भाषा को समझने में समय और मानसिक क्षमता लगा देते है।

अंग्रेजी शासन काल भारत में अधिक से अधिक लाभ कमाने हेतु अपना विकास कर रहा था वे भारत में शिक्षा के विकास को लेकर कोई रुचि नहीं रखना चाहते थे। और अगर वे कुछ प्रोत्साहन के लिए प्रयास करते भी तो वह केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही होते थे। और उसी समय मिशनरियों एवम् प्रबुद्ध भारतीयों ने पाश्चात्य शिक्षा, धर्म निरपेक्ष एवम् आधुनिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु सरकार पर दबाव डालना प्रारंभ कर दिया क्योंकि उनका मानना था कि पाश्चात्य शिक्षा के द्वारा ही भारत की सामाजिक, आर्थिक एवम् राजनीतिक समस्याओं को दूर किया जा सकता है और उनका मुख्य उद्देश्य यह भी था कि पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार से भारतीयों की परंपरागत धर्म में आस्था समाप्त हो जायेगी और वे ईसाई धर्म को अपना लेंगे। परंतु उस समय कुछ भारतीयों ने अपने प्रयास व्यक्तिगत स्तर पर जारी रखे जिसमे से राजा राम मोहन राय भी थे वे कलकत्ता विश्विद्यालय को अधिक मात्रा में अनुदान भी देते थे, कलकत्ता विश्विद्यालय में अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा दी जाती थी तब यूरोपीयन पुस्तकों को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी कराते थे जिसके लिए अनुदान दिया जाता था। उसी समय आंग्ल प्राच्य विवाद का प्रारंभ हुआ जिसमे दो दल शामिल थे प्रथम दल प्राच्य शिक्षा समर्थक था और दूसरा आंग्ल शिक्षा समर्थक। प्राच्य शिक्षा समर्थकों का कहना था कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों के विकास के लिए पाश्चात्य शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है जबकि हमें परंपरागत भारतीय शिक्षा,

भाषाओं एवम् साहित्य को प्रोत्साहित करना चाहिए। दूसरी ओर आंग्ल शिक्षा समर्थकों का कहना था कि अंग्रेजी भाषा में ही शिक्षा पद्धति को चलाया जाना चाहिए। इस विवाद के चलते कई दुष्परिणाम भी हुए। सन् 1835 में गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी परिषद के सदस्य लॉर्ड मैकाले ने आंग्ल दल का समर्थन किया और 2 फरवरी, 1835 को अपने महत्वपूर्ण स्मरण पत्र में उसने लिखा कि "सरकार के सीमित संसाधनों के मद्देनजर पाश्चात्य विज्ञान एवम् साहित्य की शिक्षा के लिए, माध्यम के रूप में अंग्रेजी भाषा ही सर्वोत्तम है।" उनका यह भी कहना था की "भारतीय साहित्य का स्तर यूरोपीय साहित्य की तुलना में अत्यंत निम्न है।" और उन्होंने भारतीय शिक्षा पद्धति की आलोचना की और अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का पूर्ण समर्थन किया। प्रस्तुत विचारों के पश्चात सरकार ने तुरंत ही विद्यालयों एवम् विश्विद्यालयों में शिक्षा पद्धति हिंदी माध्यम से बदलकर अंग्रेजी माध्यम कर दी गई। और बड़े पैमाने में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालय एवम् विश्विद्यालय स्थापित भी किए गए। ब्रिटिश साम्राज्य एक ऐसा व्यक्ति तैयार करना चाहते थे "जो रक्त एवम् रंग से भारतीय हो परंतु विचार नैतिक मापदंड प्रज्ञा एवम् प्रवृत्ति से अंग्रेज हो"।

तभी एक तरफ उत्तर पश्चिमी प्रांत (आधुनिक उत्तर प्रदेश) के लेफ्टिनेंट गवर्नर जेम्स थामसन (1843 से 1853) ने भारतीय भाषाओं द्वारा एक ग्राम शिक्षा की विस्तृत योजना बनाई जिसमे अंग्रेजी माध्यम से चलने वाले छोटे छोटे विद्यालय बंद करा दिए गए और इसके बाद केवल कॉलेजों में ही अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम रह गया था। गांव में विद्यालयों में कृषि सबंधित विधि प्रारंभ किए गए और शिक्षण का माध्यम भारतीय भाषा को ही चुना गया। इसके अतिरिक्त एक शिक्षा विभाग का भी गठन किया गया। ताकि नवगठित राजस्व तथा लोक निर्माण विभागों के लिए शिक्षित व्यक्ति उपलब्ध हो सके। इसके बाद तो जैसे माध्यमिक शिक्षा की परिस्थिति निम्न होती ही गई परंतु सन् 1937, में मूल शिक्षा की वर्धा योजना तैयार की गई जिसका उद्देश्य गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करना था।

इसमें गांधी जी का मानना था कि पाश्चात्य शिक्षा ने मुट्ठी भर शिक्षित भारतियों एवम् जनसाधारण के मध्य एक खाई पैदा कर दी है तथा इससे इन शिक्षित भारतियों की विद्वता अप्रभावी हो गई है। इस योजना में दिए गए सुझावों में से मुख्य सुझाव यह भी था कि माध्यमिक शिक्षा के स्तर तक शिक्षा विद्यार्थी को मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए और शिक्षा का माध्यम हिन्दी होना चाहिए। **2015, भारत में शिक्षा का विकास** कई लोग अंग्रेजी भाषा को सर्वश्रेष्ठ भाषा

मानकर हिंदी भाषा का निरादर करते हैं परंतु अंग्रेजी भाषा दूसरे नं. पर बोली जाने वाली सर्वाधिक भाषा है जो कि 1.5 बिलियन लोगो के द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। यह सबसे लोकप्रिय भाषा है और शीर्ष बोली जाने वाली भाषाओं में नं तीन पर है। इस भाषा को विश्व एटलस के अनुसार 35 देश अपनी मुख्य भाषा के रूप में प्रयोग करते है। वहीं विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में नं 4 पर बोली जाने वाली भाषा हिंदी है इस भाषा को पूरे विश्व में 80 करोड़ लोग समझते है जिसमे हिन्दुस्तानी लोग 45 करोड़ है। इस भाषा को पूरे विश्व में कुल 490 मिलियन लोग प्रयोग करते है।दोनों भाषाएं मुख्य रूप से समान है परंतु फिर भी कई लोग हिंदी भाषा को निरादर की भावना से प्रदर्शित करते है, और यह परिस्थिति हमारे लिए शैक्षिक गतिविधियों में भी बाधा के रूप में दिखाई देती है| **पीयूष केसरी (2022), विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाएं| जया रामचंदानी (जुलाई 11, 2018), क्या द्विभाषी शिक्षा भारत के लिए एक समाधान है?"** में बताया गया है कि द्विभाषी एवम् बहुभाषी शिक्षण हमारे भारत के लिए निश्चित रूप से एक समाधान के रूप में प्रदर्शित होती है परंतु एक कक्षा में विभिन्न विभिन्न भाषाओं के विद्यार्थी हो सकते है जिस वजह से यह शिक्षक के लिए बाधा जनक परिस्थिति होगी कि वह एक कक्षा में एक साथ अनेक भाषाओं को सम्मिलित कर पाए इस वजह से इनके द्वारा कहा गया कि वहां द्विभाषी शिक्षण का उपयोग करके विद्यार्थियों को एवम् शिक्षकों को दोनो के लिए सुविधा जनक परिस्थिति उत्पन्न की जा सकती है। जहा हम द्विभाषी शिक्षा को समझने की बात करते है तो वहां कई तरह के प्रशन उठते है। इसका उत्तर समझने के लिए हम निम्नलिखित शब्दों पर विचार कर सकते है। ''द्विभाषावाद और बहुभाषावाद स्थिर स्थितियां नही है'' **हॉफमैन (1991)** द्विभाषी शिक्षण वह विधि है, जिसमें केवल मातृभाषा में शब्दों का अनुवाद करके अन्य दूसरी भाषा में शिक्षण किया जाता है, यह एक ऐसी प्रकार की विधि है जिसमें दो भाषाओं के शब्दों को एक साथ जोड़ कर वाक्य बनाए जाते है और दो तीन बार इस व्यवहार को अपनाने से विद्यार्थी नवीन भाषा में पूरा वाक्य विद्यार्थी पढ़ या बोल सकता है। वर्तमान समय में इस विधि का वास्तविक रूप में प्रयोग शैक्षिक क्षेत्रों के अलावा साथ-साथ उन स्थानों पर होता है, जहां अलग अलग भाषाओं के जानकार लोगो के बीच संवाद को बनाए रखने का प्रयास करते है और इनके बीच द्वीभाषी एक माध्यम की

भूमिका निभाता है। वैसे तो अंतराष्ट्रीय स्तर पर द्विभाषी शिक्षण पद्धति को **सी.जे.डोडसन द्वारा सन् (1967)** में श्रव्य - दृश्य पद्धति के समकक्ष के रूप में विकसित किया गया था। द्विभाषी पद्धति प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में वैज्ञानिक रूप से नियंत्रित प्रयोगों के आधार पर दो क्रांतिकारी सिद्धांतो की वकालत करती है। द्विभाषी शिक्षण विधि एक नवाचारी विधि है जिसमें विद्यार्थियों को नवीन भाषा सिखाते समय उसके शब्द और वाक्य अलग अलग भाषाओं में सिखाने के स्थान पर दो भाषाओं में सम्मिलित करते हुए वाक्य बनाकर यदि बार बार अभ्यास करवाते है तो रोचकता पूर्ण तरीके से एक बालक कम समय में अन्य भाषा का वाक्य बनाना सीख जाता है और वह मौखिक रूप से बोलना भी सीख जाता है उदाहरण के लिए विद्यार्थी को निम्नलिखित अभ्यास करवाए तो वह अभ्यास कुछ इस प्रकार होगा, लो आम, लो mango, take आम, take mango. इसी तरह शैक्षिक परिस्थिति में हम द्विभाषी शिक्षण का उपयोग करते है इसी वजह से विद्यार्थी कक्षा में समायोजन की परिस्थिति उत्पन्न कर सकते है और यह तकनीकी, इंजिनियरिंग, कलात्मक एवम् मानविकी क्षेत्र में रुचि ले सकेंगे और अन्य क्षेत्रों की ओर उन्मुख हो सकेंगे। **सराह जैन एनके (अप्रैल 27,2015) "द एफेक्ट ऑफ बिंग बाइलिंगुअल इन द एरिया ऑफ एकेडमिकस"** के द्वारा अध्ययन में बताया गया है कि द्विभाषी होना विद्यार्थियों के शैक्षिक क्षेत्र को तब अधिक सकारात्मक रूप में प्रभावित करता है जब विद्यार्थी प्रथम भाषा के कौशलो को पूर्ण रूप से सीख जाता है या वह प्रथम भाषा में पूर्ण रूप से शिक्षित होना चाहिए।, **अमालिराजिक. के (अप्रैल, 1995), "बाइलिंगुअल एजुकेशन एंड द टीचिंग ऑफ इंग्लिश एज अ सेकंड लैंग्वेज इन इंडिया अ केस स्टडी ऑफ केन्द्रीय विद्यालय"** के द्वारा किए गए शोध में भी द्विभाषी शिक्षण को प्रोत्साहित किया गया है जिसमे केंद्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों पर शोध किया गया था। कक्षाओं में शिक्षण का माध्यम अंग्रेजी था और अंग्रेजी को द्वितीय भाषा के रूप में ही प्रयोग किया जाता था। अध्ययन के परिणामों द्वारा पता लगा की विद्यार्थी द्वितीय भाषा को धीरे धीरे अपनाने लगते है और और वह द्वितीय भाषा के साथ समायोजन अधिक अच्छा करने लग जाते है। परंतु प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर हम यह जांचना चाहते है कि वास्तव में कक्षा में विद्यार्थी द्विभाषी बनकर विकास एवम् प्रगति की ओर बढ़ते है या जिस भाषा को उन्होंने अपने जीवन में कभी प्रयोग न किया हो और अचानक से उसको जब यह शिक्षा प्रक्रिया के साथ सिखाई जाए तो यह उसके लिए बाधा का काम करती है या नही?

1.1.1.द्विभाषिकता का अर्थ - द्विभाषावाद शब्द की चर्चा और व्याख्या विभिन्न भाषाई और शिक्षाविदों द्वारा की जाती है। हाल ही में कुछ मनोवैज्ञानिकों ने भी इन शब्दों को मानव के भाषाई व्यवहार के संदर्भ में समझाया है। भाषा की तरह द्विभाषावाद एक सामाजिक-सांस्कृतिक घटना है जो विभिन्न भाषाई समूहों के बीच बातचीत से सुनिश्चित होती है। द्विभाषावाद की अवधारणा अकेले भाषा के दायरे से बाहर चली गई है। द्विभाषावाद के दायरे और जिस क्षेत्र से यह संबंधित है, उसके बारे में विद्वानों के बीच मतभेद हैं।

''द्विभाषी व्यक्ति या समुदाय वह हैं जोकि स्वयं संचार मांगो के लिए संवाद माध्यमों में दो या दो से अधिक भाषाओं की क्षमता के साथ कार्य करते हैं'' **मोहंती (1994)**

''द्विभाषा से तात्पर्य जन्म से ही दो भाषाओं के संपर्क में आना और सीखना उन्हें एक ही समय में बोलने के लिए उजागर करना है'' **(बेकर 1998)**

1.1.2 आत्मविश्वास का अर्थ - आत्मविश्वास एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है जो कि व्यक्ती को स्वाधीनता प्रदान करती है, और इसी के माध्यम से व्यक्ति को अपने कार्यों को पूर्ण करने में सरलता एवम् सफलता प्राप्त होती है, यह व्यक्तियों में आत्मरक्षा की भावना भी उत्पन्न करती है। आत्मविश्वास का शाब्दिक अर्थ "आत्मा में विश्वास रखना" अर्थात् अपने ऊपर विश्वास करना होता है। यह हमारी संकल्प शक्ति को बल प्रदान करती है। और एक विद्यार्थी के जीवन में आत्मविश्वास का बहुत महत्व होता है क्योंकि उसे अपने हर कदम पर आत्मविश्वासी बनना पड़ता है तभी वह अपनी शैक्षिक समस्याओं का सामना करके सफलता की ओर बढ़ता है

परमेंद्र यादव (2022) के अनुसार "आत्मविश्वास साहस और योग्यता का वह समन्वय है, जिसमें व्यक्ति अपनी क्षमता का उचित एवम् अधिकतम उपयोग कर किसी भी कार्य को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाता है।

इमरसन, आर. डब्लू. एवम् उद्धरत जैन (2015) ने आत्मविश्वास को परिभाषित करते हुए लिखा है कि आत्मविश्वास से तात्पर्य "स्वयं पर विश्वास"।

1.1.3.शैक्षिक समायोजन का अर्थ - शैक्षिक समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थी अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित सबंध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। साथ ही जब व्यक्ति अपने व्यवहार की गतिशीलता का प्रयोग आवश्यकताओं की पूर्ति और आत्म पुष्टि के लिए करता है तो इसे समायोजन की प्रक्रिया कहा जाता है।

आइजनेक के अनुसार (अरुण कुमार 2001) ''समायोजन व्यवस्था है जिसमें एक तरफ व्यक्ति की आवश्यकताएं बढ़ती है तो दूसरी तरफ वातावरण के अधिकारों मैं पूर्ण संतुष्टि होती है अथवा समायोजन में प्रक्रिया है जिसके द्वारा इन दोनों अवस्थाओं में संतोषजनक तालमेल होता है।''

1.2.0 समस्या का प्रादुर्भाव

हिंदी भारत की अधिकांश भाषा है, जिसे भारत की अधिकतर जनसँख्या प्रयोग में लाती है, परन्तु वर्त्तमान परिस्थिति में अगर हिंदी भाषा की स्थिति देखी जाये तो यह असंतोष रूप में दिखाई देती है| हिंदी भाषा राजभाषा होते हुए भी अपना महत्व खोती जा रही है, चाहे वह शैक्षिक क्षेत्र हो या व्यवसायिक क्षेत्र हो या भारतीयों के दैनिक जीवन में प्रयोग की जाने वाली भाषा| क्योकि इन क्षेत्रो में अंग्रेजी भाषा ने अपना प्रभुत्व बना लिया है, जिसमे भारतीयों का बहुत बड़ा योगदान है| भारत में अधिकतर व्यक्ति अपनी भाषा से बचने लगे है, और उसे प्रयोग करने में निरादर की प्रवती प्रदर्शित करते है|, जो कि हिंदी भाषा के विकास एवं प्रचार में बाधा की भूमिका निभाती है|, और वही अभिवृति विद्यार्थियों में भी विकसित होने लगी है|, जिस वजह से वे हिंदी भाषा का प्रयोग करने से एवं प्रयोग करने वालों से बचने लगे है| परिणाम स्वरुप जो विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा का प्रयोग कर पाने में असमर्थ होते है, वे कक्षा में अपने आप को पिछड़ा हुआ मानकर अनेक गतिविधियों से बचने लगते है, और अंग्रेजी बोलने वाले विद्यार्थियों के लिए एक अलग प्रवति का निर्माण करते है, जो कि शैक्षिक समायोजन के लिए नकारात्मक कारक के रूप में भूमिका निभाता है, क्योकिं विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के लिए उनके साथ अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है, और जब वह भूमिका सीमित होती है, तो वह विद्यार्थी को कम आत्मविश्वासी बनाती है| जिस वजह से बुद्धिमान विद्यार्थी भी कक्षा में अपना बेहतर प्रदर्शन कर पाने में सक्षम नहीं होते है| वहीं जब अंग्रेजी भाषा को देखे तो भले ही वह विश्वस्तरीय भाषा हो परन्तु भारत में यह डेढ़ से दो प्रतिशत ही बोले जाने वाली भाषा है इसके बावजूद वह भारत में प्रमुख स्थान बनाये हुए है| इसी वजह से भारत में द्विभाषी शिक्षण का उदय हुआ| जब हम

द्विभाषी शिक्षण की बात करते है, तो यह विषय के रूप में सन् 1960 से देखा जा रहा था उसी समय कांग्रेस ने 1960 में द्विभाषी एक्ट पास किया था। जिसका टाइटल VII of the Elementary and Secondary Education Act था। इसको समय के अनुसार संशोधित भी किया गया था और सन् 1978 में यह विशेष कार्यकमों को फंडिंग भी प्रोवाइड करवाता था जो कि लिमिटेड इंग्लिश प्रोफिशिएट इंडियन चिल्ड्रन के लिए चलाए जाते थे। द्विभाषीकरण सन् 1921 से ही प्रचलन में था जब हमारे देश के देश के विभिन्न नेताओ का भी यही मानना था कि द्विभाषिकता अत्यंत आवश्यक है, परंतु महात्मा गांधी जी द्वारा प्रारंभ से ही मातृभाषा पर अधिक बल देने की बात को कहा गया परंतु उस समय रविंद्रनाथ टैगोर जी का द्विभाषीकता और बहुभाषिकता को अत्यधिक सहयोग प्राप्त था जिन्होंने बताया कि गाँधी जी का मातृभाषा को लेकर प्रेम और सम्मान तो सराहनीय है लेकिन उनका द्विभाषीकता और बहुभाषीकता को लेकर अप्रोसाहित अभिवृति आपत्तिजनक है तो इस पर गाँधी जी के विचार आए जिससे यह साबित हो गया कि वे भी द्विभाषीकता और बहुभाषिकता को महत्वपूर्ण मानते है अर्थात् वे कहते है कि मै अंग्रेजी अधिगम का विरोध नही करता परंतु देशवासियों का केवल अंग्रेजी को हो सबकुछ बना देने से या अंग्रेजी को मातृभाषा का स्थान देने से विरोध करता हूं। परंतु इन विचारों के होते हुए भी हम सभी हम सभी देश के नेताओं को एक ही स्थान पर देख सकते हैं जैसे गांधीजी अपनी पुस्तकें गुजराती में लिखते थे परंतु वे चाहते थे कि उनका अंग्रेजी में अनुवाद भी किया जाए ताकि उनके विचार अन्य विद्वानों तक भी पहुंचे उनके पत्र भारतीय विचार या औपनिवेशिक सरकार के लिए याचिका सभी हमें अंग्रेजी में ही मिलते हैं, हम गांधी जी के अलावा अन्य चिंतकों की बात करें तो बाल गंगाधर तिलक मराठी थे परंतु अन्य भाषाओं में लेख प्रकाशित किए गए वही राममोहन राय फारसी, बांग्ला में किताबें लिखते थे, जबकि इनको संस्कृत और अरबी भी आती थी। इन सभी से यह पता लगता है कि, अंग्रेजी भाषा को हमें अहिन्दियो के लिए उपयोग करना चाहिए ताकि वे हमारी संस्कृति, विचार, तर्क को समझने में सक्षम हो सके नाकि हमे अंग्रेजी भाषा का उपयोग दैनिक जीवन की गतिविधियों में उपयोग करके अपने ही उन भारतीयों के लिए बाधा उत्पन्न करें जिनकी साधारण बोल चाल की भाषा हिंदी है| इसी तर्क को आधार बनाते हुए प्रस्तुत अध्ययन का विकास किया जायेगा| और द्विभाषी शिक्षण भारतीय विद्यार्थियों के लिए एक समस्या नहीं बल्कि समाधान बने ऐसा प्रयास किया जायेगा| जैसा कि टैगोर जी का मानना था की मातृभाषा को व्यक्तिगत या पारिवारिक स्तर पर तो व्यक्त कर सकते हैं परंतु जब बात एक बड़े

समुदाय तक अपनी बात को पहुंचाने की हो तो वहां हमें एक अन्य भाषा को संभालना ही पड़ता है, यह सभी के वैचारिक खुले पन के लिए आवश्यक है, प्रस्तुत वाक्य दर्शाते है, कि जब विस्तृत समूह की बात करते हैं, तो वंहा केवल एक भाषा का उपयोग काफी नहीं हैं, यह समूह राष्ट्रिय, अन्तराष्ट्रीय स्तर का हो सकता है, न कि विद्यालयी स्तर का| यह तर्क विद्यार्थी ही नहीं बल्कि उनके अभिभावकों तक भी पहुँचाया जाना चाहिए, और उनकी अभिवृत्ति भी हिंदी भाषा के प्रति परिवर्तित करनी होगी| यहां पर हमें द्विभाषिकता बहुसंस्कृतिवाद का एक आधार के रूप में नज़र आती है। इनके बाद बी. आर. अंबेडकर जी थे, जिन्होंने स्थानीय समुदाय के लिए मराठी व भारत और विश्व के लिए अंग्रेजी में लिखा। राजनीति के स्थान पर हीरेन मुखर्जी जोकि प्रसिद्ध लेखक थे बांग्ला और अंग्रेजी में चर्चित लेख लिखते थे साथ ही वर्तमान परिस्थिति में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी जो कि गुजराती मूल के होकर हिंदी में इतना अच्छा भाषण देते हैं कि उन से प्रभावित होकर तमिलनाडु के वरिष्ठ नेता पी. चिदंबरम ने सन 2014 के लोकसभा चुनाव के दौरान खुद स्वीकार करते हुए कहा कि काश मुझे भी हिंदी आती तो मैं भी नरेंद्र मोदी को बनारस में चुनावी टक्कर दे पाता।

डॉ राधा कृष्णन, **(1948) के अनुसार**, "भारतवर्ष के हर भाग को समझने के लिए यह आवश्यक है कि माध्यमिक स्तर तक दो भाषाएं अवश्य पढ़ाई जाए। एक मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा और दूसरी आंग्ल भाषा। विश्वविद्यालय स्तर पर विधार्थी को क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान अवश्य होना चाहिए, लेकिन उनमें इतनी योग्यता आवश्यक हो कि वह अंग्रेजी के माध्यम से अन्य भाषाओं के साहित्य का ज्ञान प्राप्त करे।" प्रस्तुत कथन भी अंग्रेजी भाषा का प्रयोग अन्य संस्कृति एवं अन्य भाषा में प्रकाशित साहित्य के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है, न की हिंदी भाषा का किसी भी रूप में विरोध करता है| वही मुदालियर कमीशन ने भी दो भाषाओं की बात कही थी, एक मातृ भाषा या क्षेत्रीय भाषा और दूसरी अंग्रेजी या हिंदी। यह कुछ इस प्रकार है- उन क्षेत्रों में जहां हिंदी मातृ भाषा है, वहा अंग्रेजी। और जहा जहा क्षेत्रीय भाषा पढ़ाई जाए, वहा हिंदी। परंतु इसके पश्चात त्रिभाषी सूत्र आया। **माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53)** के द्वारा भी द्विभाषी शिक्षण की बात की गई है जिसमे माध्यमिक स्तर पर मातृ भाषा और क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण किए जाने की बात की गई है और मिडिल स्कूल के स्तर के अंतर्गत प्रथम भाषा हिंदी और द्वितीय भाषा अंग्रेजी, जूनियर बेसिक स्तर के अंत में प्रारंभ होनी चाहिए। उच्च एवम् उच्चतर स्तर पर मुख्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी

दोनों भाषाओं में अध्ययन होना चाहिए। NCF **(2005)** के द्वारा भी माध्यमिक स्तर पर दो भाषाओं में अध्ययन करने पर सहयोग प्रदान करता है और यह कक्षा 1 से 5 तक मातृ भाषा या क्षेत्रीय भाषा, और कक्षा 6 से 8 तक मातृ भाषा या क्षेत्रीय भाषा और अंग्रेजी भाषा के शिक्षण पर बल देता है उसके बाद ये त्रि सूत्रीय भाषा में शिक्षण करने पर बल देता है। **राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2007)** द्वारा कक्षा 1 से ही हिंदी भाषा (क्षेत्रीय भाषा) के साथ साथ अंग्रेजी भाषा का ज्ञान आवश्यक बताया गया है। द्विभाषी शिक्षा को कक्षा में उन दृष्टिकोणों के रूप में परिभाषित किया जाता है जो निर्देश के लिए अंग्रेजी भाषा सीखने वालों की मूल भाषाओं का उपयोग करते हैं। द्विभाषी शिक्षा कार्यक्रम का मूल लक्ष्य सीमित अंग्रेजी दक्षता रखने वाले छात्रों की मदद करना और उन्हें राज्य के पाठ्यक्रम में महारत हासिल करने के साथ-साथ कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी छात्रों को अंग्रेजी सिखाने के लिए सशक्त बनाना है यह शैक्षणिक क्षेत्रों में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने में स्पष्ट निर्देश के माध्यम से किया जाता है और इसी तरह विद्यार्थी जो अंग्रेजी भाषा में असक्षम हैं| वें अंग्रेजी सीखकर अन्य विद्यार्थियों के साथ मिलकर अपने आप को उनके ही समान कक्षा में अपना बहतर प्रदर्शन दिखा सकते हैं|

1.3.0 औचित्य

भारत में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, छत्तीसगढ़ ऐसे राज्य हैं जहां हिंदी भाषा का वर्चस्व है उन क्षेत्रों में हिंदी माध्यम विद्यालयों के साथ-साथ अंग्रेजी माध्यम द्वारा संचालित विद्यालय भी हैं जो CBSE, ICSE द्वारा मान्यता प्राप्त है जहां पूर्ण शिक्षण अंग्रेजी भाषा में किया जाता है अंग्रेजी एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा है अतः बहुत से अभिभावक अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में विद्यार्थी का दाखिला तो करवा देते हैं लेकिन बोलचाल की भाषा हिंदी होने के कारण एवं अभिभावकों की अंग्रेजी भाषा पर पकड़ न होने के कारण वे विद्यार्थी कक्षा कार्य को ठीक प्रकार से नहीं समझ पाते हैं उन विद्यार्थियों की बुद्धि क्षमता अच्छी होने के बावजूद भी उनको भाषाई समस्या का सामना करना पड़ता है जिस वजह से वह कक्षा में अपने आप को अत्यधिक पिछड़ा हुआ पाते हैं, और अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में उनको अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिस वजह से उसका प्रभाव सीधे-सीधे उनके शैक्षिक गतिविधियों और पढ़ाई पर पड़ता है अर्थात विद्यार्थी शिक्षा को लेकर अपनी नकारात्मक अभिवृत्ति बनाने लगते हैं

और उनका मन पढ़ाई से हटने लगता है और कक्षा में अपनी सहभागिता नहीं बड़ा पाते हैं। ऐसे बालकों को कक्षा में ठीक प्रकार से समायोजित करने में सहायता करना शिक्षकों की जिम्मेदारी है। आवश्यकता इस बात की है कि आवश्यकतानुसार शिक्षक कक्षा में 2 भाषाओं का प्रयोग करें और कक्षा को द्विभाषी बनाई जाए, जिसमें उस स्थान की बोलचाल की भाषा हो और धीरे-धीरे विद्यार्थी को उस भाषा से जोड़ने का प्रयास किया जाना चाहिए जिसमें उसे परीक्षा देनी है अथवा जिस माध्यम के विद्यालय में उसने दाखिला लिया है उस प्रयास से संभावित रूप से बालक के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। उत्तर प्रदेश हिंदी भाषा राज्य है अतः अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत बहुत से विद्यार्थी अपने ग्रामीण परिवेश सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण कक्षा में सहज महसूस नहीं कर पाते है। अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में यदि शिक्षक क्षेत्र की भाषा हिंदी का भी प्रयोग करें तो धीरे-धीरे विद्यार्थी को नई भाषा अंग्रेजी की ओर उन्मुख करके उसमें बेहतर समायोजन में मदद की जा सकती है इसी आधार पर शोधार्थी के समक्ष निम्न शोध प्रश्न उत्पन्न होते हैं।

तालिका सं.1 सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

क्रम संख्या	शोधकर्ता एवम विषय	शोध का विषय	निष्कर्ष
1.4.1 द्विभाषी शिक्षण से सम्बन्धित शोध			
1	श्री सोनम वांगचुक, (1988)	स्टूडेंट एजुकेशनल एंड कल्चरल मूवमेंट ऑफ लद्दाख	लद्दाख के विद्यालयों में लगभग 95% विद्यार्थी कक्षा मातृभाषा में शिक्षण ना मिल पाने के कारण कक्षा में फेल हो गए क्योंकि उन्हें कक्षा में कुछ समझ ही नहीं आता था जब उन्हीं विद्यार्थियों को मातृभाषा में शिक्षा दी गई तो उनका परिणाम बेहतर होने लगा शोध परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों को शिक्षा मातृभाषा में दी जाने चाहिए।
2	मल्टी लीला परियोजना जांच परिणाम,(2016 से 20)	किस भाषा के द्वारा विद्यार्थी सीखते हैं।	जिन जिन विद्यार्थियों का शिक्षण उनकी भाषा में दिया गया था वह अधिक सकारात्मक रूप में प्रभावित थे।
3	स्टीफेन मे (2017)	बाइलिंगुअल एजुकेशन वॉट द रिसर्च टैल्स अस, (बाइलिंगुअल एंड मल्टीलिंगुअल एजुकेशन)	यह अध्ययन पूर्ण रूप से द्विभाषी एवम् बहुभाषी को प्रोत्साहित करता है और इस अध्ययन के अनुसार विद्यार्थी को शिक्षा द्विभाषी ही देनी चाहिए।
4	मिंकयुंग किम,	सेकंड लैंग्वेज रीडिंग एंड	इनके द्वारा बताया गया कि द्वितीय भाषा

	स्कॉट ए. क्रॉसले एवम् बाइंग केविन किम (2020)	राइटिंग इन रिलेशन टू फर्स्ट लैंग्वेज, वोकेबुलरी नॉलेज, एंड लर्निंग बैकग्राउंड	हमारे शैक्षिक, व्यक्तिगत एंड व्यवसायिक क्षेत्र में हमको उपलब्धि दिलाता है। इस अध्ययन में अंग्रेजी भाषा जो के द्वितीय भाषा थी उसका प्रथम भाषा (हिंदी) के साथ सीधा सबंध बताया गया है, अर्थात प्रथम भाषा हमें पठन कौशल एवम् लेखन कौशल की क्षमता देती है और द्वितीय भाषा हमें भाषाई ज्ञान एवम् शैक्षिक क्षेत्र में सहायता देती है। अर्थात् प्रथम भाषा के ज्ञान को और निखारता है और दोनो ही भाषा में सकारात्मक सबंध पाया जाता है।
5	लिजुआन वैंग एंड एलिना लेहतोमकी (2021)	बाइलिंगुअल एजुकेशन एंड बियोंड हाव स्कूल सेटिंग शेप द चाइनीज ली माइनोरिटिस सोशियो कल्चरल अटैचमेंट्स	इस अध्ययन को कक्षा 10 के न्यायदर्श पर आयोजित किया गया और बहुराष्ट्रीय लॉजिस्टिक रिग्रेशन मॉडल का उपयोग करके किया गया जिसमें निम्न लिखित निष्कर्ष दिए गए - अल्पसंख्यकों के स्कूल सेटिंग विकल्पों में पारिवारिक सामाजिक आर्थिक स्थिति निर्धारक है। स्कूल की व्यवस्थाएं छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियां और व्यवसायिक अपेक्षा चीनी स्कूलों के छात्रों में मातृभाषा के प्रति सांस्कृतिक लगाव में कमी आदि ये द्विभाषी का कारण हो सकती है।
6	कैथरिन मोनियर, जूली बोइचे, पॉलिन अरमांडन, सोफी एवम् स्टेफनी बेलोची (2022)	इज बाईलिंगुअललिज्म एसोसिएटेड विद बैटर वर्किंग मैमोरी कैपेसिटी? अ मैटाएनालिसिस	यह अध्ययनों के आधार पर कहते है कि द्विभाषी एक भाषी से अधिक बेहतर प्रदर्शन करते है और द्विभाषी अधिक क्षमता वाले होते है।
1.4.2 आत्मविश्वास से सम्बन्धित शोध			
7	श्रीवास्तव रेखा, (1989)	विकलांग एवं सामान्य किशोरों एवं किशोरियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन	परिणाम स्वरूप सामने आया कि विकलांग किशोरों में सामान्य किशोरों की अपेक्षा अधिक आत्मविश्वास पाया गया और विकलांग एवं सामान्य किशोरियों के आत्मविश्वास में कोई अंतर नहीं पाया गया।
8	पुरवार मीना,(1992)	कानपुर नगर और देहात के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले और शहरी अनुसूचित जाति बनाम सामान्य जाति के छात्रों तथा छात्राओं के आत्मविश्वास का अध्ययन|	परिणाम में सामने आया कि आत्मविश्वास को आकांक्षा स्तर से असहसम्बन्धित पाया गया।
9	सिंह, प्रतिमा	स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षको	प्रस्तुत अध्ययन में न्यायदर्श के रूप में उ. प्र. के वाराणसी मंडल में वित्तपोषित एवम्

	(2014)	में समायोजन, जीवन संतुष्टि एवम् आत्मविश्वास की स्तिथि का तुलनात्मक अध्ययन	स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों से 600 शिक्षकों (370 शहरी एवम् 230 ग्रामीण शिक्षकों) का चयन यादृच्छिक विधि से किया। आत्मविश्वास मापन के लिए रेखा अग्निहोत्री द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया। सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग प्रदत्तो के विश्लेषण हेतु किया गया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि वित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी है। वित्तपोषित महाविद्यालयों के सामान्य वर्ग के शिक्षक, स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के सामान्य वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षाकृत अधिक आत्मविश्वासी वाले है।
10	सिंगला, रुचि (2015)	ए स्टडी ऑफ इमोशनल कंपीनटेंसी ऑफ टीचर एजुकेटर्स इन रिलेशन टू देयर सेल्फ कॉन्फिडेंस, एडजस्टमेंट एंड लाइफ सेटिस्फीकेशन	प्रस्तुत अध्ययन में डॉ. रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया गया। संकलित प्रदत्तो के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो से ज्ञात हुआ कि महिला एवम् पुरुष शिक्षकों के आत्मविश्वास के बीच सार्थक अंतर था। पुरुष शिक्षक अपने समकक्षों की तुलना में अधिक आत्मविश्वासी थे। ग्रामीण एवम् शहरी शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अंतर पाया गया। ग्रामीण कॉलेज शिक्षकों की तुलना में शहरी कॉलेज शिक्षकों का आत्मविश्वास कम था वित्तपोषित एवं स्ववित्त पोषित कॉलेज शिक्षक शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अंतर पाया गया। स्ववित्तपोषित कॉलेज शिक्षकों की तुलना में वित्तपोषित कॉलेज शिक्षकों का आत्मविश्वास कम था। 3 साल के कम एवं 3 साल के ज्यादा शिक्षण अनुभव रखने वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास में सार्थक अंतर पाया गया। 3 साल से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की तुलना में 3 साल से कम शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक का आत्मविश्वास अधिक पाया गया।
11	मलिक, उपेंद्र एवम् योगेश (2016)	ए स्टडी ऑफ सेल्फ कॉन्फिडेंस ऑन एकेडमिक अचीवमेंट अमंग सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स	प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक विधि से कक्षा 11वी के 200 छात्रों का चयन न्यायदर्श हेतु किया। आत्मविश्वास मापन के लिए डॉ. रेखा अग्निहोत्री द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी का उपयोग किया गया। एकत्रित प्रदत्तो के विश्लेषण के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि उच्च

			एवम् निम्न आत्मविश्वास वाले 11 वी कक्षा के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर है। उच्च एवम् निम्न आत्मविश्वास वाले 11 वी कक्षा के लड़कों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है। उच्च एवम् निम्न आत्मविश्वास वाले 11 वी कक्षा के लड़कियों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है।
12	शुक्ला दीपक (2016)	बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में अमत्विश्वास का तुलनात्मक अध्ययन	प्रस्तुत शोध में शोध न्यायदर्श के रूप में इन्होंने ग्वालियर शहर के दो अशासकीय शिक्षा महाविद्यालय से 100 प्रशिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया। प्रद्त्तो के संकलन हेतु डॉ. रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया गया। प्रदत्तो के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधियों के रूप में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवम् टी-परीक्षण को प्रयोग किया। अध्ययन के परिणाम स्वरूप पाया गया कि महिला प्रशिक्षणार्थी के आत्मविश्वास के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया।
1.4.3 शैक्षिक समायोजन से सम्बन्धित शोध			
13	कुमार फुलवरिया राजेश (2008)	आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों के मध्य समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।	शोध निष्कर्ष में पाया गया कि, आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों के मध्य शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
14	नंदा ए. एन. (2009)	किशोर बालिकाओं की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता एवं समायोजन पर अध्ययन।	निष्कर्ष के अंतर्गत पाया गया कि किशोर बालिकाओं में परीक्षा के प्रति चिंता बनी रहती है क्योंकि उनका सामाजिक स्तर सफलता पर निर्भर करता है माता-पिता की दमनात्मक अभिवृत्ति तथा लड़कियों की परिपक्वता प्राप्त करने की स्थिति में माता-पिता की अत्यधिक निगरानी भी समायोजन में समस्या उत्पन्न करती है।
15	उपाध्याय संतोष (2009)	उच्च और निम्न वैज्ञानिक मनोवृति वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास स्वधारणा एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन ।	शोध का मुख्य उद्देश्य सामान्य व अनुसूचित जाति की छात्राओं के समायोजन एवं दुश्चिंता का पता लगाना था। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि अनुसूचित जाति की छात्राओं का शैक्षिक समायोजन सामान्य जाति की छात्राओं की तुलना में अच्छा पाया गया, साथ ही अनुसूचित जाति की छात्राओं में सामान्य जाति की छात्राओं की तुलना में अधिक दुश्चिंता पाई गई।

16	सिंह महेश कुमार (2009)	उच्च और निम्न वैज्ञानिक मनोवृति वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास स्वधारणा एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन ।	जिसका मुख्य उद्देश्य उच्च व निम्न वैज्ञानिक मनोवृति वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास व स्वधारणा एवं समायोजन को ज्ञात करना था। इसमें सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष से प्राप्त हुआ कि उच्च वन्य में वैज्ञानिक मनोवृति वाले विद्यार्थियों के समायोजन के मध्य मानव के मध्य सार्थक अंतर पाया गया है। उच्च वैज्ञानिक मनोवृति वाले विद्यार्थियों में आत्मविश्वास व धारणा एवं समायोजन अच्छा पाया गया है जबकि निम्न वैज्ञानिक मनोवृति वाले विद्यार्थियों में आत्मविश्वास व धारणा एवं समायोजन निम्न स्तर का पाया गया है।
17	चौधरी कैलाश चंद्र (2011)	अध्यापकों की संगठनात्मक प्रतिबद्धता का उसके व्यक्तित्व गुणों तथा सामंजस्य से संबंध का अध्ययन।	जिसका मुख्य उद्देश्य उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के सामंजस्य का अध्ययन करना था।सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।शोध निष्कर्ष से प्राप्त हुआ कि अध्यापकों में व्यवसायिक संतुष्टि संवेगिक अस्थिरता, असुरक्षा की भावना, अपर्याप्त आय, सेवा सुरक्षा का अभाव, छात्रों में फैली अनुशासनहीनता, संस्था प्रधान का पक्षपात पूर्ण रवैया आदि ऐसे कारण हैं , जो अध्यापकों में हो समायोजन के लिए उत्तरदाई हैं। सामंजस्य की समस्याएं व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती हैं साथ ही व्यवसायिक एवं सामाजिक क्षेत्रों को भी प्रभावित करती हैं।
18	सिंह, प्रतिमा (2014)	स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षको में समायोजन, जीवन संतुष्टि एवम् आत्मविश्वास की स्तिथि का तुलनात्मक अध्ययन	प्रस्तुत अध्ययन में न्यायदर्श के रूप में उ. प्र. के वाराणसी मंडल में वित्तपोषित एवम् स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों से 600 शिक्षकों (370 शहरी एवम् 230 ग्रामीण शिक्षकों) का चयन यादृच्छिक विधि से किया। आत्मविश्वास मापन के लिए रेखा अग्निहोत्री द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया। सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग प्रदत्तो के विश्लेषण हेतु किया गया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि वित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी है। वित्तपोषित महाविद्यालयों के सामान्य वर्ग के शिक्षक, स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के सामान्य वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षाकृत अधिक आत्मविश्वासी वाले है। स्ववित्तपोषित

			महाविद्यालयों के पिछड़े वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा सामान्य वर्ग के शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी थे। वित्तपोषित महाविद्यालयों की महिला शिक्षक, अपेक्षाकृत स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों की महिला शिक्षको से अधिक आत्मविश्वास वाली है। वित्तपोषित महाविद्यालयों के ग्रामीण एवम् शहरी शिक्षकों के आत्मविश्वास में समानता है। स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के ग्रामीण एवम् शहरी शिक्षकों के आत्मविश्वास में समानता पाई।

प्रस्तुत शोधों की समीक्षा करने के पश्चात शोधकत्री ने यह पाया कि द्विभाषी शिक्षण पर निम्न लिखित शोधों का आयोजन किया गया है किंतु उनका माध्यमिक स्तर पर आत्मविश्वास, शैक्षिक समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन नही देखा गया है, अर्थात् प्रस्तुत शोध द्विभाषी शिक्षण का आत्मविश्वास, शैक्षिक समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करेगा।

1.5.0 शोध प्रश्न-

1. क्या द्विभाषी शिक्षण माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर प्रभाव डालता हैं?
2. क्या द्विभाषी शिक्षण माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन पर प्रभाव डालता है?
3. क्या द्विभाषी शिक्षण माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालता है?

अतः बहुभाषिक भारत में उपरोक्त सार्थक प्रश्नों की खोज के संदर्भ में शोधार्थिनी द्वारा माध्यमिक स्तर पर CBSE माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत अंग्रेज़ी भाषा वाले विद्यार्थियों की एवम् अंग्रेजी एवम् हिंदी भाषा वाले विद्यार्थियों के उनके आत्मविश्वास, शैक्षिक समायोजन एवम् उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन के संदर्भ में अध्ययन किया जाएगा।

1.6.0 समस्या कथन

माध्यमिक स्तर पर द्विभाषी शिक्षण का विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, शैक्षिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

1.7.0 अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषीकरण

1.7.1 आत्मविश्वास

शिक्षा मानव का जीवन मूल साधन है और शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शक्तियों का विकास कर सकता है अतः वह अपनी सामाजिक, संवेगात्मक और शैक्षिक कौशलो में वृद्धि कर सकता है इसीलिए कहा जाता है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। परंतु एक विद्यार्थियों या व्यक्ति को अपने शैक्षिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने अंदर आत्मविश्वास का विकास करना होता है। एक आत्मविश्वास ही बालक या विद्यार्थी अपने जीवन के लक्ष्य को पूर्ण तरीके से प्राप्त कर सकता है और विद्यार्थी आत्मविश्वासी तभी बन सकता है जब उसका मस्तिष्क स्वस्थ होगा और वह अपने संवेग में परिपक्व हो पाएगा। अर्थात आत्म विश्वास एक ऐसी अभी प्रेरणात्मक शक्ति है जो किसी कार्य को करने के लिए शक्ति प्रदान करती है। आत्मविश्वास एक व्यक्ति का वह रूप है जिसमे व्यक्ति स्वयं को जानने लगता है इसीलिए आत्मविश्वास को मानव के व्यक्तित्व के विकास होने का मुख्य आधार या स्तंभ माना जाता है इससे जीवन के प्रत्येक पक्ष प्रभावित होते है जब व्यक्ति को अपनी क्षमता पर पूर्ण विश्वास होता है तो वही उसका आत्मविश्वास होता है।

सैद्धांतिक परिभाषा

जरशील्ड (1997) के शब्दों में, "आत्मविश्वास से आशय है कि यह व्यक्ति के अपने विचारों भावनाओं आशाओं भय कल्पनाओं तथा अपने मूल्यों के सबंध में उसकी अभिवृत्तियो की ही एक समष्टि है।"

कार्यात्मक परिभाषा

आत्मविश्वास व्यक्ति की आत्मनुभूति है जो कि उसके व्यवहार में अभिप्रेरित भावना जागृत करती है यह एक परिस्थिति है जिसमे जब व्यक्ति प्रवेश करता है तो वह किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हो जाता है।

1.7.2 शैक्षिक समायोजन

व्यक्ति का संबंध एक ही नहीं वरन अनेक प्रकार के वातावरण जैसे सामाजिक वातावरण राजनैतिक आर्थिक प्राकृतिक हदीस वातावरण से होता है इन सभी वातावरण में व्यक्ति अपने को समायोजित करने का प्रयास करता है लेकिन सामाजिक वातावरण में समायोजन स्थापित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है साथ ही जब विद्यार्थी की बात की जाए तो उसका समायोजन शैक्षिक गतिविधियों में अत्यंत आवश्यक है क्योंकि व्यक्ति अपना विकास तथा अपनी भौतिक

आवश्यकताओं की पूर्ति समाज में रहकर ही करता है और जहां विद्यार्थी की बात करते हैं तो उसका पूर्ण समायोजन शैक्षिक कक्षा में होना अत्यंत आवश्यक होता है। शैक्षिक समायोजन से तात्पर्य विद्यार्थी के विद्यालय कक्षा तक शिक्षा से संबंधित समायोजन से है शैक्षिक वातावरण में विद्यार्थी स्वयं को विद्यालय या कक्षा का परिस्थितियों में समायोजित करने का प्रयास करता है

सैद्धांतिक परिभाषा

बॉरिंग व अन्य के अनुसार (1992). "समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक जीवित प्राणी अपनी आवश्यकताओं एवं इन आवश्यकता ओं की संतुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के साथ संतुलन बनाए रखता है अतः का जा सकता है कि समायोजन व्यक्ति की आंतरिक और बाह्य आवश्यकताओं की पूर्ति एवं उनमें सामंजस्य स्थापित करने का संतोषजनक माध्यम है यह चाहे व्यक्ति के सामान्य क्षेत्र में हूं या उसके विशिष्ट क्षेत्र में समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कई व्यक्ति अपनी इच्छा आवश्यकता हो तथा वातावरण के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है समायोजन मानव जीवन में निरंतर चलने वाली क्रियाशील प्रक्रिया है जो बालक को सामाजिक मानसिक संवेगात्मक शारीरिक बौद्धिक विकास की अन्य क्रियाओं के साथ सामंजस्य करना सिखाती है। जब बालक इन परिस्थितियों व वातावरण के बीच समायोजन नहीं कर पाता है तो वह दबावग्रस्त, तनाम व कुंठाग्रस्त हो जाता है।"

कार्यात्मक परिभाषा

समायोजन एक परिस्थिति है जिसमे व्यक्ति अपने आवश्यकताओं की पूर्ति में सामंजस्य बनाने का प्रयत्न करता है। यह वह भावना है जिसमे व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों से संबंधित आने वाले विचारों के मध्य संतुलन बनाने का प्रयास करता है।

1.8.0 अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर द्विभाषी शिक्षण का विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर प्रभाव का अध्ययन।
2. माध्यमिक स्तर पर द्विभाषी शिक्षण का विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन।
3. माध्यमिक स्तर पर द्विभाषी शिक्षण का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

1.9.0 अध्ययन की परिकल्पना

शोध अध्ययन से संबंधित निम्न परिकल्पना निर्मित की है जिन का परीक्षण शोध में किया जाएगा।

Ha1 माध्यमिक स्तर पर द्विभाषी शिक्षण का विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर सकारात्मक प्रभाव होगा।

Ha2 माध्यमिक स्तर पर द्विभाषी शिक्षण का विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन सकारात्मक पर प्रभाव होगा।

Ha3 माध्यमिक स्तर पर द्विभाषी शिक्षण का विद्यार्थीयो के शैक्षिक उपलब्धि सकारात्मक पर प्रभाव होगा।

1.10.0 अध्ययन के चर

वर्तमान शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा चयनित चर इस प्रकार हैं –

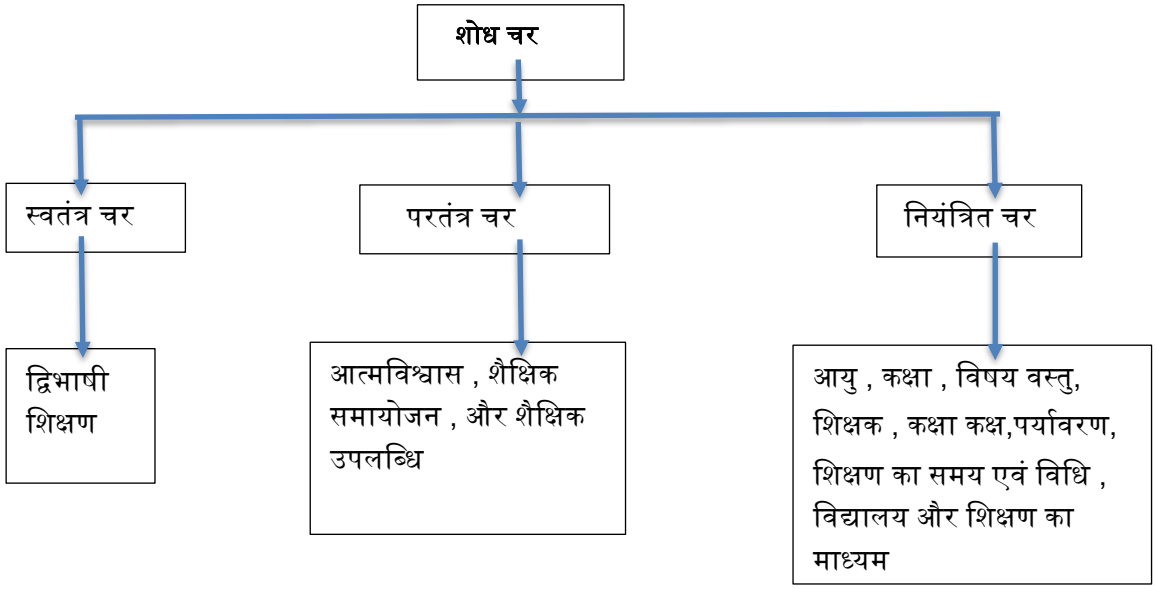
शोध चर
स्वतंत्र चर
परतंत्र चर
नियंत्रित चर
द्विभाषी शिक्षण
आत्मविश्वास , शैक्षिक समायोजन , और शैक्षिक उपलब्धि
आयु , कक्षा , विषय वस्तु, शिक्षक , कक्षा कक्ष,पर्यावरण, शिक्षण का समय एवं विधि , विद्यालय और शिक्षण का माध्यम

चित्र सं. 1 अध्ययन के चर

1.11.0 अध्ययन की समष्टि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या आगरा शहर में स्थित CBSE माध्यम द्वारा संचालित अंग्रेजी माध्यम के कक्षा 8 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा |

1.12.0 अध्ययन का प्रतिदर्श

CBSE द्वारा संचालित अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में से कक्षा 8 के विद्यार्थियों में से 100 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा |

1.13.0 अध्ययन में प्रयुक्त प्रतिदर्श विधि

सोद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा CBSE द्वारा संचालित अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय का चयन किया जायेगा और साधारण यादृच्छिक न्यायदर्शन विधि द्वारा न्यायदर्श के रूप में 100 इकाईयों का चयन किया जायेगा |

1.14 .0 अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थिनी द्वारा प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा।

1.15.0 अनुसन्धान प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं अनोवा प्रविधि का उपयोग किया जायेगा।

1.16 .0 न्यायदर्श का चयन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त न्यायदर्श चयन की प्रक्रिया इस प्रकार है-

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में सोद्देश्य विधि द्वारा CBSE द्वारा संचालित अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यायदर्श इकाइयों के रूप में कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।

1.17 .0 न्यादर्श चयन की प्रक्रिया-

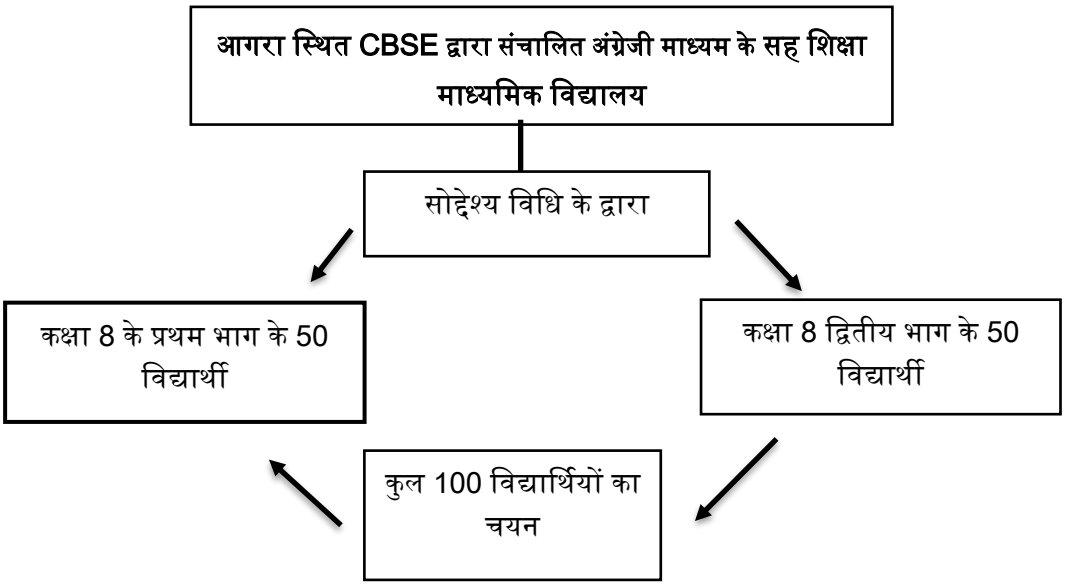
आगरा स्थित CBSE द्वारा संचालित अंग्रेजी माध्यम के सह शिक्षा माध्यमिक विद्यालय
सोद्देश्य विधि के द्वारा
कक्षा 8 के प्रथम भाग के 50 विद्यार्थी
कक्षा 8 द्वितीय भाग के 50 विद्यार्थी
कुल 100 विद्यार्थियों का चयन

चित्र सं. 2 न्यायदर्श की प्रक्रिया

1.18.0 प्रस्तुत अध्ययन में अनुसन्धान की प्रक्रिया कुछ इस प्रकार है –

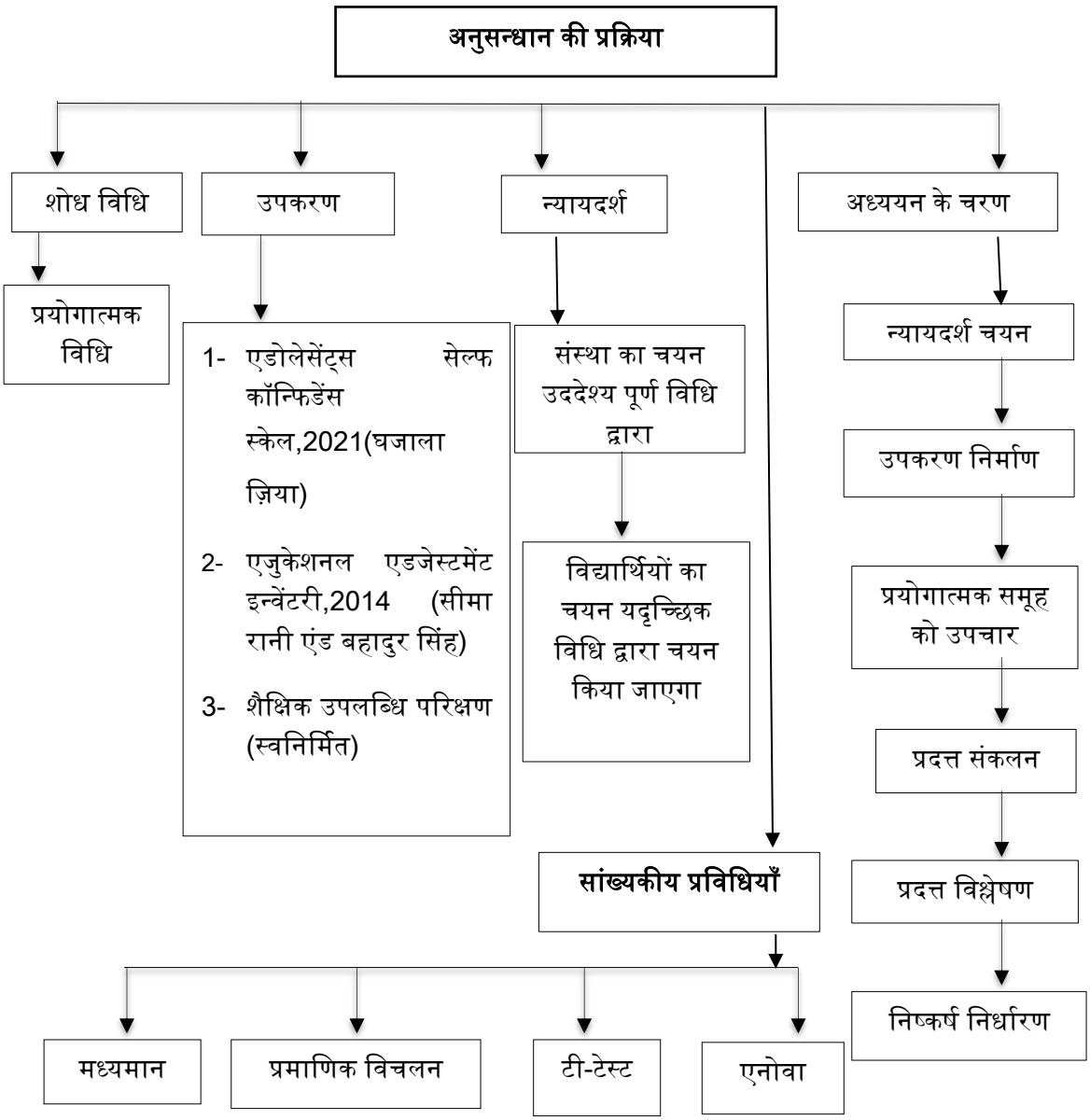

चित्र सं. 3 अनुसंधान की प्रक्रिया

1.19 .0 शोध अध्ययन का प्रारूप-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में दो समूह यादृच्छिक पूर्व पश्च परिक्षण शोध प्रारूप अपनाया जायेगा-

तालिका सं. 2 शोध प्रारूप

समूह	पूर्व परिक्षण	उपचार		अवधि		पश्च परिक्षण
प्रयोगात्मक समूह	1) आत्मविश्वास 2) शैक्षिक समायोजन 3) शैक्षिक उपलब्धि	न्यायदर्श	उपचार	चक्रावधि	सम्पूर्णा अवधि	1) आत्म विश्वास 2) शैक्षिक समायोजन 3) शैक्षिक उपलब्धि
		विद्यार्थियों की संख्या- 50	द्विभाषीशिक्षण (मातृभाषा हिंदी एवम् शैक्षिक माध्यम भाषा अंग्रेजी) आधारित सामाजिक विषय शिक्षण की स्वनिर्मित 25 पाठयोजना	40 मि० प्रतिदिन	कुल प्रयोग अवधि 30 दिन	
नियंत्रित समूह	1) आत्मविश्वास 2) शैक्षिक समायोजन 3) शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थियों की संख्या- 50	परम्परागत शिक्षण (अंग्रेजी भाषा) आधारित सामाजिक विषय शिक्षण की स्वनिर्मित 25 पाठ योजना	40 मि० प्रतिदिन	कुल प्रयोग अवधि 30 दिन	1) आत्मविश्वास 2) शैक्षिक समायोजन 3) शैक्षिक उपलब्धि

1.20.0 अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण एवम् उपकरणों का सर्वेक्षण

तालिका सं. 3 आत्मविश्वास से सबंधित उपकरण

1.20.1 प्रयुक्त उपकरण						
क्रम संख्या	**परीक्षण का नाम**	**संस्करण**	**निर्माता**	**विश्वनीयता**	**वैधता**	**अध्ययन में प्रयोग किए जाने वाले उपकरण की न्यायोचितता**
1.	सेल्फ कॉन्फिडेंस स्केल	हिंदी एवम् अंग्रेजी	मधु गुप्ता एवम् बिंदिया	0.728	0.264 to 0.439	प्रस्तुत उपकरण माध्यमिक एवम् उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए निर्मित है, जो के

	(2018)		लखानी			विद्यार्थियों के आत्मविश्वास क्षेत्र का अध्ययन करने में सहायक है, यह 48 पदों को शामिल किया गया है, साथ ही यह उपकरण 300 विद्यार्थियों पर अध्ययनरत है।
2.	एडोलेसेंट्स सेल्फ कॉन्फिडेंस स्केल (2021)	अंग्रेजी	घजाला ज़िया	.01	0.01	प्रस्तुत उपकरण 13 से 18 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों पर अध्ययनरत है, यह उपकरण विद्यार्थी के निम्नलिखित क्षेत्रों का अध्ययन करता है - शारीरिक, सामाजिक, संवेगिक, मानसिक एवम् शैक्षिक। और यह 42 पदों द्वारा अध्ययन किया गया गया है। प्रस्तुत शोध के अनुसार चर पर आधारित यही उपकरण अधिक उपयोगी है क्योंकि यह समय के अनुसार संशोधित उपकरण है।
1.20.2 शैक्षिक समायोजन से सबंधित उपकरण						
3.	एडजस्टमेंट इन्वेंटरी फॉर स्कूल स्टूडेंट्स (2022)	हिंदी एवम् अंग्रेजी	ए. के. पी. सिन्हा, आर. पी. सिंह	.01	.01	यह उपकरण 14 - 18 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों के लिए निर्मित है यह उपकरण विद्यार्थी के सांवेगिक, सामाजिक एवम् शैक्षिक पक्षों का अध्ययन करता है। प्रस्तुत उपकरण में 100 प्रश्नों को प्रयोग में लाया गया है जिसका उत्तर हां या न में देना है।
4.	एजुकेशनल एडजस्टमेंट इन्वेंटरी, (2014)	हिंदी	सीमा रानी एवम् बसंत बहादुर सिंह	Test -retest=.93 Split half corelating=.96 Kuder richardson method=.96	Face validity of the inventory appeared to br fairly high	प्रस्तुत उपकरण 6 से 14 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों पर अध्ययनरत है, जिसमे 30 पदों का उपयोग किया गया है यह पद विद्यार्थी के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन करने में सहायक है। प्रस्तुत शोध के अनुसार यही उपकरण अधिक उपयोगी है क्योंकि यह पूर्ण रूप से चर के अनुसार विद्यार्थी के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन

						करने में सहायक होगा।
1.20.3 शैक्षिक उपलब्धि से सम्बंधित उपकरण						
5	शैक्षिक उपलब्धि परिक्षण	हिंदी एवं अंग्रेजी	स्वनिर्मित			

1.21.0 सीमांकन – प्रस्तुत शोध अध्ययन विद्यार्थी के निम्नलिखित पक्षों तक ही सीमित होगा ।

- आत्मविश्वास
- शैक्षिक समायोजन
- शैक्षिक उपलब्धि

  - प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश क्षेत्र तक ही सीमित होगा |
  - प्रस्तुत शोध अध्ययन आगरा जनपद के विद्यालयों तक ही सीमित होगा।
  - प्रस्तुत अध्ययन केवल CBSE द्वारा संचालित अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों तक ही सीमित होगा ।
  - प्रस्तुत अध्यन में केवल 100 विद्यार्थियों को ही शामिल किया जायेगा ।
  - प्रस्तुत अध्ययन द्विभाषी शिक्षण में मातृभाषा हिंदी को आधार बनाया जाएगा एवं विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुसार अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाएगा।

1.22.0 शैक्षिक उपादेयता

हमारा भारत एक बहुभाषी देश है जहाँ अनेकों भाषाएँ हैं। परंतु जब शिक्षा की बात की जाए तब हमारी भाषाओं की सीमा अपने रूप को सिकोड़ लेती हैं भारत में अंग्रेजी माध्यम द्वारा संचालित विद्यालयों की संख्या अधिक है जो केवल अंग्रेजी को आधार बनाकर ही शिक्षण करते हैं, जिसमें वे विद्यार्थी जो कि अंग्रेजी से पूरी तरह परिचित नहीं है वह अपने आप को असहज महसूस करते हैं, और बुद्धिमान और प्रतिभाशाली होते हुए भी वह कक्षा में अपनी भागीदारी पूर्ण रूप से नहीं प्रदर्शित कर पाते हैं, जिस वजह से वह शिक्षा से दूर होते हुए दिखाई पड़ते हैं। इसी तर्क पर आधारित यह शोध हमें यह बताने में सक्षम होगा कि-

- द्विभाषी शिक्षण विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर किस तरह का प्रभाव डालती है और उसके आत्मविश्वास, एवं संवेगात्मक विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालती है या नकारात्मक प्रभाव।
- प्रस्तुत शोध द्वारा द्विभाषी शिक्षण प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का विकास होगा।
- प्रस्तुत शोध द्वारा द्विभाषी शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में विकास होगा।
- प्रस्तुत शोध द्वारा द्विभाषी शिक्षण प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।
- प्रस्तुत शोध के द्वारा कक्षा में द्वीभाषा में शिक्षण करने में शिक्षकों को सहायता मिलेगी और विद्यार्थियों के लिए शिक्षा प्राप्त करने का माध्यम सरल हो पायेगा।
- प्रस्तुत शोध के द्वारा विद्यार्थियों के जीवन में द्विभाषी शिक्षण की भूमिका का परीक्षण करेंगे।
- प्रस्तुत शोध के द्वारा अन्य भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे और उनमें शिक्षा के प्रति रुचि का विकास हो सकेगा।
- विद्यार्थियों के व्यवहार में सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास हो सकेगा।
- प्रस्तुत शोध के द्वारा विद्यार्थियों को स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त हो सकेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

- कुमार मुकेश (2005), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (भारतीय भाषाओँ का शिक्षण), राष्ट्रीय फोकस समूह का आधारपत्र, पृष्ठ संख्या 20
- **अग्निहोत्री रमाकांत**, **बहुभाषिकता**, **साक्षरता**, **भाषा शिक्षण एवम् बौद्धिक विकास, समाज का ताना बाना और भाषा इकाई**-3 **अध्याय** 9
- Thakur Pankaj and Kumar Rakesh 2021, "Educational Policies, Comparative Analysis of National Education Policies of India and Challenges". Cummins, Jim Bilingual Children's Mother Tongue: Why Is It Important for Education?, http://www.fiplv.org/Issues/CumminsENG.pdf
- 2020, **प्रगतिशील शिक्षा (शिक्षण विधियां एवं मनोविज्ञान**, **मूल्याकंन**, **कौशल)** https://teachingmethodspoint.blogspot.com/2020/08/blog-post_79.html?m=1

- **चंद्रादीप महाराज**, **"आत्मविश्वास क्या है"** https://adhyatmapedia.com/atmavishwas-kya-hai/
- **द्विभाषी विधि** https://www.hmoob.in/wiki/Bilingual_method https://www.hmoob.in/wiki/Bilingual_education
- **योगदान**, (2021), "**द्विभाषी शिक्षण विधि से क्या तात्पर्य है।**" https://elegantanswer.com/?p=99440
- **टोरेस टोनी**, "**द्विभाषी शिक्षा के फायदे और नुकसान**" https://madreshoy-com.cdn.ampproject.org/v/s/madreshoy.com/hi/%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B7%E0%A5%80%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A5%87%E0%A4%AB%E0%A4%BE%E0%A4%AF%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%94%E0%A4%B0%E0%A4%A8%E0%A5%81%E0%A4%95%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%A8/amp/?amp_gsa=1&amp_js_v=a9&usqp=mq331AQKKAFQArABIIACAw%3D%3D
- **श्रीवास्तव रविन्द्र नाथ**, 1979, **भाषा शिक्षण पुस्तक**
- **निष्ठा**, **सितंबर**, 2019 **"स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल"।**
- **चावला कुमार विजय** 2020, **भारतीय भाषा**, **शिक्षा**, **साहित्य एवम् शोध।**
- **चतुर्वेदी पंकज**, 2020, **द्विमासिक पुस्तक संस्कृति।**
- Kumar Deep, Rani Anamika and Ray Harendra, 2019, Language Across the Curriculum. Susan E. Malone, 2006, sTaken from Resource Manual for Mother Tongue speakers ofminority languages engaged in planning and implementing education programs in their own communities.
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीशि की (नेप) 2020 की प्रमुख शिक्षाएं : उच्चिर शिक्षा**
- **यादव नरेश एवम् उप्पल श्वेता दिसंबर** 2008, **अंग्रेजी शिक्षण**, **राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र।**
- **शिक्षण माध्यम** 1962, '**आयोजित कुलपतियों के सम्मेलन में "विश्वविद्यालय शिक्षा के कतिपय आयाम"**
- Chin Aimee, 2015, "Impact of bilingual education on student achievement"

- Vennela R. and Richard Smith 2015, "Bilingual English teaching in colonial India: the case of John Murdoch's work in Madras Presidency, 1855–1875".
- V. Satya and Durga 2018, "English Language Teaching: The Bilingual Method".
- Goswami Neha, 2020, "Language Across The Curriculum" Stephen May, Faculty of Education and Social Work, The University of Auckland and Auckland, New Zealand 2017, "Bilingual and Multilingual 29 Education"
- Raosaheb Bhanji Ajit, 2016, The Impact of Bilingualism on teaching learning of English at '' undergraduate level in swami Ramanand Teerth Marathwada university Nanded.
- Singh Rajendra,2011 , Ucch madhyamik star ke vidarthiyon ki samajik paripakvata, atmvishvas evam kuntha ka unki shaikshik nishpatti se sambandh ka ek adhyayan.
- **शर्मा प्रतिभा एवम लाल व्यास भगवती**, 2014, **माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन के सबंध का अध्ययन|**
- **जैसवाल अनुपम**, 2019, **माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन आयामों एवम् उनके माता पिता की सहभागिता आयामों के मध्य सबंधों का अध्ययन।**
- **कुमार संजीव**, 2020, **आत्मविश्वास|**
- https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%B8
- **यादव परमेंद्र**, 2022, **आत्मविश्वास क्या है।**
- https://badisoch.in/badi-soch/self-confidence-kya-hai/
- राजकुमार, 2016 कोटा विश्विद्यालय, तकनीकी शिक्षा संस्थानो में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव का एक अध्ययन।

- नागमणी. के., कुलकर्णी शिल्पा, 2019 "जवाहर लाल नेहरू स्नाकोत्तर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सकतपुरा, बाल सम्प्रेषण ग्रह से मुक्त उच्च एक निम्न सामाजिक समायोजन वाले बालको शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन|"
- निष्ठा, सितम्बर 2019, स्कूल, प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल।
- कुमार चौबे आदित्य, 2009 लोहिया राममनोहर अवध यूनिवर्सिटी फैजाबाद, स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास समायोजन एवम् शैक्षिक उपलब्धि का एक अध्ययन।
- कुमार सुनील, 2006 वी बी एस पूर्वांचल यूनिवर्सिटी, समायोजन एवम् शैक्षिक उपलब्धि पर नैतिक मूल्य के प्रभाव का अध्ययन ।
- https://www.open.edu/openlearncreate/mod/oucontent/view.php?id=80347&printable=1
- https://sstmaster.com/kothari-commission-hindi/
- Mohanty, A.K. (1994 b, July). Bilingualism in a multilingual society: Implications for cultural integration and education. Keynote address in the XXIIIInternational Congress of Applied Psychology, Madrid, Spain. Mohanty, A.K. (2004).
- Laurance F, Shaffer (1948) in foundation of psychology: Edited by Boring Language & Weld, John wlley and sons Inc, New York .P.510-511.
- Lazarus, R.S. (1961), The concept of adjustment and personality, N.Y. MC Graw Hill P. 4- 8
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (भारतीय भाषाओँ का शिक्षण), राष्ट्रीय फोकस समूह का आधारपत्र, पृष्ठ संख्या 20
- भुट्टो, शहरी किशोर एवं किशोरियों की बुद्धि स्तर तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के संबंध में समायोजन के अंतर का अध्ययन। पी एच डी शिक्षा शास्त्र, कश्मीरी विश्विद्यालय, कश्मीर।
- जी आर शर्मा, किशोर छात्र छात्राओं के संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन पीएचडी शिक्षाशास्त्र लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

- के० कुमार, विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन तथा व्यक्तित्व विशेषताओं की परस्पर सहसबंध का अध्ययन, पी०एच०डी० शिक्षाशास्त्र, वीर बहादुर सिंह, पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर।
- 2015, **भारत में शिक्षा का विकास।** https://www.vivacepanorama.com/development-of-education-in-india/
- **पीयूष केसरी**, (2022) "**विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाएं**", https://www.enterhindi.com/most-spoken-languages-in-the-world/